International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-08-2025, Accepted: 14-09-2025, Published: 29-09-2025
Volume 11, Issue 5, 2025, Page No. 93-96

कंदरिया महादेव मंदिर: नागर वास्तुकला का चरमोत्कर्ष – एक वास्तुगत एवं कला–ऐतिहासिक विश्लेषण

संजय कुमार यादव
शोधार्थी, प्राचीन इतिहास, संस्कृति, कला एवं पुरातत्व विभाग, श्री महन्थ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुड़कुड़ा, गाजीपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
यह शोध पत्र मध्य प्रदेश के खजुराहो में स्थित कंदरिया महादेव मंदिर का एक व्यापक वास्तुशिल्प और कला–ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह मंदिर चंदेल राजवंश के संरक्षण में, विशेष रूप से राजा विद्याधर द्वारा लगभग 1025–1050 ईस्वी में निर्मित, नागर शैली की वास्तुकला के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। कई विद्वान इसे महमूद गजनवी पर विद्याधर की सैन्य विजय के उपलक्ष्य में बनाया गया एक विजय स्मारक मानते हैं। वास्तुशिल्प की दृष्टि से, मंदिर नागर शैली के सिद्धांतों का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें एक ऊँचा मंच (जगती), एक अक्षीय योजना (अर्धमंडप, मंडप, महामंडप से गर्भगृह तक), और एक भव्य शिखर शामिल है। इसकी सबसे विशिष्ट विशेषता इसका जटिल शिखर है, जो कैलाश पर्वत का प्रतीक है और 84 छोटे सहायक शिखरों (उरुशृंगों) से घिरा हुआ है, जो एक अद्भुत दृश्य बनाता है। मंदिर की 'सप्तरथ' योजना और 'सांधार' (आंतरिक प्रदक्षिणा पथ) डिजाइन इसकी विकसित शैली को दर्शाते हैं। मंदिर का मूर्तिकला कार्यक्रम भी उतना ही प्रभावशाली है, जिसमें लगभग 900 मूर्तियाँ हैं जो इसकी हर सतह को सुशोभित करती हैं। इन मूर्तियों को एक पदानुक्रम में व्यवस्थित किया गया है: आधार पर धर्मनिरपेक्ष जीवन के दृश्य, और दीवारों पर देवता, अप्सराएँ, पौराणिक जीव (व्याल), और प्रसिद्ध मिथुन (कामुक युगल)। ये मिथुन मूर्तियाँ, जो कुल मूर्तियों का एक छोटा हिस्सा हैं, मानव जीवन के चार लक्ष्यों (पुरुषार्थों) में से एक 'काम' का प्रतिनिधित्व करती हैं या तांत्रिक दर्शन को दर्शाती हैं। अंततः, कंदरिया महादेव मंदिर केवल एक पूजा स्थल नहीं है, बल्कि चंदेलों की शक्ति, कलात्मक प्रतिभा और एक एकीकृत हिंदू विश्वदृष्टि का एक स्थायी प्रमाण है, जो इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में एक अमूल्य सांस्कृतिक विरासत बनाता है।

मूलशब्द: स्थापत्य शैली, वास्तुशिल्प, नागर शैली, वास्तुकला, जगती, खजुराहो उप–शैली, वास्तु–पुरुष–मंडल, सप्तरथ प्रक्षेपण

प्रस्तावना
चंदेल राजवंश (लगभग 9वीं से 13वीं शताब्दी ईस्वी) के संरक्षण में, मध्य भारत का खजुराहो क्षेत्र केवल एक राजनीतिक केंद्र नहीं, बल्कि एक जीवंत धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक गतिविधियों के केंद्र के रूप में उभरा। यह काल भारतीय मंदिर वास्तुकला के "स्वर्णिम युग" का प्रतिनिधित्व करता है। चंदेल शासकों ने अपनी राजधानी खजुराहो में एक विशाल मंदिर परिसर की स्थापना की, जिसमें मूल रूप से 85 मंदिर शामिल थे, जो उनकी महत्वाकांक्षा और भक्ति के पैमाने को प्रदर्शित करता है। यह परिसर हिंदू और जैन दोनों धर्मों के स्मारकों को आश्रय देता है, जो इस क्षेत्र की धार्मिक सहिष्णुता और समन्वयवादी संस्कृति का प्रमाण है। इन मंदिरों का निर्माण केवल धार्मिक अनुष्ठानों के लिए नहीं किया गया था, बल्कि वे सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के केंद्र भी थे, जो चंदेल साम्राज्य की शक्ति, समृद्धि और कलात्मक उत्कृष्टता का उद्घोष करते थे।

खजुराहो के मंदिरों के समूह में, कंदरिया महादेव मंदिर को निर्विवाद रूप से सर्वोत्कृष्ट रत्न माना जाता है। यह इस परिसर का सबसे विशाल, उच्चतम और कलात्मक रूप से सबसे समृद्ध मंदिर है। इसकी भव्यता का अनुमान इसके आयामों और मूर्तियों की विशाल संख्या से लगाया जा सकता है, जो लगभग 900 हैं । वास्तुशिल्प की दृष्टि से, इसे नागर शैली का सबसे परिपक्व और पूर्णतः विकसित उदाहरण माना जाता है, जो सदियों के वास्तुगत विकास के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। यह मंदिर चंदेलों के कुलदेवता भगवान शिव को समर्पित है। इसकी वैश्विक सांस्कृतिक विरासत के महत्व को स्वीकार करते हुए, 1986 में इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई, जो इसकी सार्वभौमिक अपील और ऐतिहासिक मूल्य को रेखांकित करता है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ
1. चंदेल संरक्षण और प्रेरणा
बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रमुखता प्राप्त करने वाले राजपूत चंदेल राजवंश ने मंदिर निर्माण को अपनी सत्ता को वैधता प्रदान करने, अपनी धर्मपरायणता प्रदर्शित करने और अपनी शक्ति एवं समृद्धि को प्रकट करने के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उपयोग किया। ये मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं थे, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र थे जो शाही संरक्षण के प्रतीक के रूप में खड़े थे। चंदेल शासकों ने इन भव्य संरचनाओं के माध्यम से अपने साम्राज्य की स्थिरता और धार्मिक आस्था को प्रदर्शित किया, जिससे उनकी राजनीतिक स्थिति और मजबूत हुई।

2. संरक्षण और कालक्रम का प्रश्न: एक विद्वतापूर्ण बहस
कंदरिया महादेव मंदिर के निर्माता और निर्माण तिथि के संबंध में उपलब्ध स्रोतों में विरोधाभास एक महत्वपूर्ण अकादमिक चर्चा का विषय है।

विद्याधर की परिकल्पना: प्रमुख सिद्धांत इस मंदिर का निर्माण शक्तिशाली चंदेल राजा विद्याधर द्वारा 1025–1050 ईस्वी के बीच करने का श्रेय देता है। यह कालक्रम अक्सर उनकी सैन्य सफलताओं से जोड़ा जाता है, जो इस भव्य निर्माण के लिए एक मजबूत प्रेरणा प्रदान करता है।

वैकल्पिक श्रेय: अन्य स्रोत पहले के संरक्षकों का सुझाव देते हैं, जैसे कि राजा धंगदेव (जिन्हें "चंगदेव" भी कहा गया है) द्वारा 999 ईस्वी के आसपास या राजा यशोवर्मन। इन विसंगतियों को त्रुटियों के रूप में देखने के बजाय, उन्हें एक जटिल ऐतिहासिक रिकॉर्ड के प्रतिबिंब के रूप में समझा जाना चाहिए, जहाँ पुरालेखीय साक्ष्य दुर्लभ या अस्पष्ट हो सकते हैं।

संश्लेषण और निष्कर्ष: यद्यपि यशोवर्मन और धंग जैसे पूर्ववर्ती राजाओं ने लक्ष्मण और विश्वनाथ जैसे मंदिरों के साथ खजुराहो की वास्तुशिल्प नींव रखी थी, कंदरिया महादेव की शैलीगत परिपक्वता, विशाल पैमाना और कलात्मक उत्कृष्टता चंदेल शक्ति के शिखर, यानी विद्याधर के शासनकाल के साथ सबसे निकटता से मेल खाती है। इसलिए, लगभग 1025–1050 ईस्वी की समयावधि को अकादमिक रूप से सबसे स्वीकृत काल माना जाता है।

3. विजय स्मारक की परिकल्पना

मंदिर के निर्माण के पीछे की प्रेरणा को समझने में एक प्रचलित और शक्तिशाली आख्यान इसे एक विजय स्मारक के रूप में प्रस्तुत करता है। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि मंदिर का निर्माण राजा विद्याधर ने 1019 और 1022 ईस्वी में महमूद गजनवी के आक्रमणों को सफलतापूर्वक विफल करने के उपलक्ष्य में करवाया था। इस संदर्भ में, मंदिर केवल एक धार्मिक संरचना नहीं रह जाता, बल्कि यह अवज्ञा और विजय का एक स्थायी प्रतीक बन जाता है – राज्य की सैन्य शक्ति और उसकी आस्था की विजय का एक भौतिक घोषणापत्र।

यह "विद्याधर विजय स्मारक" की परिकल्पना की व्यापक स्वीकृति केवल ऐतिहासिक साक्ष्यों पर आधारित नहीं है, बल्कि यह ऐतिहासिक आख्यान की प्रकृति को भी दर्शाती है। एक दुर्जेय आक्रमणकारी पर प्रसिद्ध विजय का जश्न मनाने के लिए बनाया गया मंदिर, एक राजा के नियमित धार्मिक कर्तव्यों के हिस्से के रूप में बनाए गए मंदिर की तुलना में कहीं अधिक सम्मोहक कहानी प्रस्तुत करता है। कंदरिया महादेव की असाधारण भव्यता एक महाकाव्यात्मक मूल कहानी की मांग करती है, और गजनवी पर विजय इसे पूरी तरह से प्रदान करती है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि कैसे इतिहास का निर्माण अक्सर स्पष्ट कारण–और–प्रभाव वाले आख्यानों की ओर झुकता है, जो महान स्मारकों को समान रूप से महान उद्देश्यों से जोड़ता है। इस प्रकार, प्रश्न "इसे किसने बनाया?" से बदलकर "इसकी रचना के बारे में एक विशेष कहानी इतनी प्रभावशाली क्यों हो गई है?" हो जाता है।

वास्तुशिल्प की रूपरेखा: नागर शैली का चरमोत्कर्ष–

1. नागर मंदिर वास्तुकला के सिद्धांत

कंदरिया महादेव मंदिर उत्तरी भारत में प्रचलित नागर मंदिर स्थापत्य शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस शैली की कुछ प्रमुख और परिभाषित करने वाली विशेषताएं हैं:

जगती (मंच): नागर शैली के मंदिर लगभग हमेशा एक ऊँचे, ठोस मंच पर बनाए जाते हैं, जिसे 'जगती' कहा जाता है। इस मंच तक पहुँचने के लिए एक खड़ी सीढ़ी होती है, जो मंदिर को एक भव्य और उन्नत स्वरूप प्रदान करती है ।

गर्भगृह: यह मंदिर का केंद्रीय और सबसे पवित्र कक्ष होता है, जिसे 'गर्भ–गृह' (शाब्दिक अर्थ 'गर्भ का घर') कहा जाता है। इसमें मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती है और यह हमेशा मुख्य शिखर के ठीक नीचे स्थित होता है।

शिखर: वक्ररेखीय, पर्वत जैसा शिखर इस शैली की सबसे विशिष्ट विशेषता है। यह गर्भगृह के ऊपर उठता है और आकाश की ओर संकेत करता है।

मंडप: गर्भगृह के सामने भक्तों के एकत्र होने के लिए बने स्तंभों वाले हॉल को 'मंडप' कहा जाता है।

अक्षीय योजना: मंदिर के सभी प्रमुख घटक – प्रवेश द्वार से लेकर गर्भगृह तक – एक ही पूर्व–पश्चिम अक्ष पर रैखिक रूप से व्यवस्थित होते हैं, जो एक प्रतीकात्मक यात्रा का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

2. चंदेल मुहावरा (खजुराहो उप–शैली)

चंदेलों ने नागर शैली के सिद्धांतों को अपनाते हुए अपनी एक विशिष्ट उप–शैली विकसित की, जिसे खजुराहो शैली के रूप में भी जाना जाता है। इस शैली की विशेषताओं में एक ही अक्ष पर कई मंडपों का एकीकरण, 'सांधार' योजना का विकास (जिसमें एक आंतरिक प्रदक्षिणा पथ होता है), और एक अत्यंत अलंकृत मूर्तिकला कार्यक्रम शामिल है जो मंदिर की लगभग हर सतह को आच्छादित करता है। यह व्यापक अलंकरण इसे उड़ीसा या सोलंकी जैसी अन्य क्षेत्रीय नागर विविधताओं से अलग करता है।

3. भू–तल योजना (वास्तु–पुरुष–मंडल)

कंदरिया महादेव मंदिर की भू–तल योजना नागर वास्तुकला की परिपक्वता को दर्शाती है।

जगती: मंदिर एक विशाल ऊँचे चबूतरे या 'जगती' पर स्थित है, जो लगभग 4 मीटर (13 फीट) ऊँचा है। यह मंच न केवल संरचना को एक प्रभावशाली उपस्थिति प्रदान करता है, बल्कि मंदिर के चारों ओर बाहरी परिक्रमा ('प्रदक्षिणा') के लिए एक पथ भी उपलब्ध कराता है। इसके आधार को जटिल नक्काशीदार पट्टियों से सजाया गया है, जिसमें हाथियों, घोड़ों, योद्धाओं और नर्तकियों के जुलूसों जैसे धर्मनिरपेक्ष जीवन के दृश्य चित्रित हैं, जो दिव्य संरचना को सांसारिक दुनिया से जोड़ते हैं।

अक्षीय प्रगति: मंदिर एक सख्त पूर्व–पश्चिम अक्ष पर विन्यासित है, जो भक्त को एक प्रतीकात्मक यात्रा पर ले जाता है। इसके घटकों का अनुक्रम इस प्रकार है:

अर्धमंडप (प्रवेश मंडप): प्रारंभिक प्रवेश बिंदु।

डप (सभा भवन): सभा के लिए एक हॉल।

महामंडप (महान सभा भवन): मुख्य, बड़ा सभा भवन, जिसमें अक्सर अलंकृत स्तंभ और पार्श्व प्रवेश होते हैं।

अंतराल (गलियारा): गर्भगृह की ओर जाने वाला एक छोटा गलियारा।

गर्भगृह: अंतरतम कक्ष, जिसमें संगमरमर का शिवलिंग स्थापित है।

सांधार योजना: कंदरिया महादेव एक 'सांधार' प्रकार का मंदिर है, जिसका अर्थ है कि इसका गर्भगृह एक बंद प्रदक्षिणा पथ से घिरा हुआ है। यह मंदिर के भीतर ही परिक्रमा के अनुष्ठान की अनुमति देता है, जो अधिक जटिल और विकसित मंदिर योजनाओं की एक विशेषता है।

सप्तरथ प्रक्षेपण: एक प्रमुख तकनीकी विशेषता 'सप्तरथ' योजना है, जिसमें गर्भगृह और मंडपों की बाहरी दीवारों पर सात ऊर्ध्वाधर प्रक्षेपण ('रथ') होते हैं। यह जटिल, कंपित डिजाइन दीवारों की सपाट सतहों को तोड़ता है, जिससे प्रकाश और छाया का एक नाटकीय खेल बनता है जो मंदिर की दृश्य जटिलता और गतिशीलता को बढ़ाता है।

गगनचुंबी अधिरचना: दिव्यता की ओर एक आरोहण–

1. शिखर: शिखरों की एक सिम्फनी

मंदिर की सबसे नाटकीय विशेषता इसकी ऊर्ध्वाधरता है, जो इसके शिखर में पूरी तरह से व्यक्त होती है।

ब्रह्मांडीय पर्वत का प्रतीकवाद: 31 मीटर (102–117 फीट) से अधिक की ऊँचाई तक उठने वाला मुख्य शिखर केवल एक छत नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली प्रतीक है। इसे एक पर्वत श्रृंखला, विशेष रूप से भगवान शिव के हिमालयी निवास, पवित्र कैलाश पर्वत का आभास कराने के लिए डिज़ाइन किया गया है। "कंदरिया" नाम, जिसका अर्थ "गुफा का" है, इस पर्वतीय कल्पना को और पुष्ट करता है, जिसमें अंधकारमय गर्भगृह ब्रह्मांडीय पर्वत के हृदय में स्थित पवित्र गुफा का प्रतिनिधित्व करता है।

उरुशृंगों की भग्न ज्यामिति: डिजाइन की प्रतिभा इस तथ्य में निहित है कि मुख्य शिखर 84 छोटे, सहायक शिखरों के समूह से घिरा हुआ है जिन्हें 'उरुशृंग' कहा जाता है। ये केवल संलग्न नहीं हैं, बल्कि मुख्य शिखर से जैविक रूप से निकलते हुए प्रतीत होते हैं, जिससे एक भग्न जैसा पैटर्न बनता है। शिखरों का यह लयबद्ध, आरोही समूह ऊँचाई की भावना को बढ़ाता है और एक गतिशील, आश्चर्यजनक सिल्हूट बनाता है जो खजुराहो शैली की पहचान है।

शीर्षस्थ तत्व: शिखर पारंपरिक नागर शीर्षस्थ तत्वों के साथ समाप्त होता है: 'आमलक', एक बड़ा, खांचेदार, चक्र के आकार का पत्थर, और 'कलश', अंतिम बर्तन के आकार का शीर्ष, जो मंदिर के ऊर्ध्वाधर अक्ष को पूरा करता है, जो पार्थिव और दिव्य लोकों को जोड़ता है।

2. मंडप: आंतरिक स्थान और अलंकरण

विश्लेषण मंदिर के अंदरूनी हिस्सों की ओर बढ़ता है। मंडपों की छतें, विशेष रूप से महामंडप की, संकेंद्रित, अतिव्यापी वृत्तों से निर्मित बताई गई हैं, जो एक अद्वितीय और अलंकृत प्रभाव पैदा करती हैं। स्तंभों पर जटिल नक्काशी की गई है, और संपूर्ण आंतरिक स्थान, हालांकि एक अंधेरे गर्भगृह की ओर ले जाता है, मूर्तिकला के विवरण से जीवंत है।

3. सामग्री और चिनाई

पत्थर का चयनरू मंदिर का निर्माण मुख्य रूप से महीन दाने वाले बलुआ पत्थर से किया गया है, जिसे पास के पन्ना क्षेत्र से लाया गया था। विशाल जगती का निर्माण कठोर ग्रेनाइट से किया गया है। बलुआ पत्थर का चुनाव महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसकी सापेक्ष कोमलता ने अविश्वसनीय रूप से विस्तृत और तरल नक्काशी की अनुमति दी जो मंदिर के सौंदर्य को परिभाषित करती है।

उन्नत निर्माण तकनीकें: चंदेलों ने एक परिष्कृत शुष्क चिनाई तकनीक का इस्तेमाल किया। विशाल पत्थर के खंडों को सटीक रूप से काटा गया और गारे या सीमेंट के उपयोग के बिना एक इंटरलॉकिंग प्रणाली का उपयोग करके एक साथ फिट किया गया । इसके लिए अत्यधिक कौशल और सटीकता की आवश्यकता थी। कुछ स्रोत पत्थरों को सुरक्षित करने के लिए लोहे की कीलों के उपयोग का भी उल्लेख करते हैं।

चमकदार पॉलिश: एक उल्लेखनीय और अनूठी विशेषता मूर्तियों पर चमकदार चमक है, जो बलुआ पत्थर को चंदन की लकड़ी ("चंदन की लकड़ी पर तराशी गई") जैसा रूप देती है। यह फिनिश कथित तौर पर पत्थर की सतहों को चमड़े से सावधानीपूर्वक पॉलिश करके ("चमड़े से जबरदस्त घिसाई") प्राप्त की गई थी।

कंदरिया महादेव का निर्माण उन्नत संरचनात्मक इंजीनियरिंग और एक गहन सौंदर्य दृष्टि के एक आदर्श संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करता है। सामग्री और तकनीकों का चुनाव केवल कार्यात्मक नहीं था, बल्कि मंदिर के प्रतीकात्मक उद्देश्य के लिए अभिन्न था। साधारण बलुआ पत्थर को पॉलिश के माध्यम से एक चमकदार, अलौकिक सतह में बदलना कलात्मक कीमिया का एक कार्य है, जिसका उद्देश्य दिव्य निवास को पारलौकिक और असाधारण दिखाना है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे मानव कौशल सांसारिक (पत्थर का एक खंड) को दिव्य में उन्नत कर सकता है, जिससे निर्माण का कार्य स्वयं एक अनुष्ठान बन जाता है।

मूर्तिकला कार्यक्रम: पत्थर में एक ब्रह्मांड

1. पैमाना और व्यवस्थित व्यवस्था

यह खंड मंदिर की विशाल मूर्तिकला संपदा को परिमाणित और व्यवस्थित करता है।

विशाल संख्या: मंदिर मूर्तियों की एक stupendous संख्या से सुसज्जित है। विभिन्न स्रोत थोड़ी भिन्न संख्याएँ प्रदान करते हैं: एक स्रोत 872 दो से तीन फुट ऊँची मूर्तियों का उल्लेख करता है, साथ ही अनगिनत छोटी मूर्तियाँ भी हैं। अन्य स्रोत 646 बाहरी और 226 आंतरिक मूर्तियों का अधिक विशिष्ट विवरण देते हैं, जिनका कुल योग 872 होता है । कुल संख्या में यह निरंतरता, अलग–अलग विवरणों के बावजूद, इस आंकड़े की विश्वसनीयता को दर्शाती है।

पदानुक्रमित व्यवस्था: मूर्तियाँ यादृच्छिक रूप से नहीं रखी गई हैं। उन्हें क्षैतिज पट्टियों में व्यवस्थित किया गया है जो मंदिर के चारों ओर हैं। निचली पट्टियों में आमतौर पर सांसारिक जीवन के दृश्य (जुलूस, योद्धा) दर्शाए गए हैं, जबकि जंघा (दीवार का हिस्सा) पर मुख्य, आंखों के स्तर की पट्टियों में सबसे महत्वपूर्ण आकृतियाँ हैं: देवता, देवियाँ और प्रसिद्ध मिथुन युगल। यह एक ऊर्ध्वाधर पदानुक्रम बनाता है, जो दर्शक को लौकिक से आध्यात्मिक की ओर ले जाता है।

2. मूर्तिकला कला का विषयगत वर्गीकरण

दिव्य देवकुल: मंदिर हिंदू देवताओं की एक दीर्घा है। मुख्य गर्भगृह में शिवलिंग है। बाहरी दीवारों पर शिव के विभिन्न रूपों, विष्णु, ब्रह्मा, गणेश और दिक्पालों (आठ दिशाओं के संरक्षक) की प्रमुख मूर्तियाँ हैं। गर्भगृह के द्वार के सरदल पर केंद्र में विष्णु, उनके दाईं ओर ब्रह्मा और बाईं ओर शिव को दर्शाया गया है, जो एक समन्वयवादी स्पर्श है।

दिव्य प्राणी: अप्सराएँ और सुरसुंदरियाँ: दिव्य कन्याओं (अप्सराओं) और सुंदरियों (सुरसुंदरियों) की सुंदर आकृतियों को गतिशील, आकर्षक मुद्राओं में चित्रित किया गया है – श्रृंगार करते हुए, गेंद से खेलते हुए, अपने पैर से कांटा निकालते हुए। ये आकृतियाँ शुभता, उर्वरता और दिव्य लोक की सुंदरता का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पौराणिक जीव (व्याल): व्याल या सिंह–सदृश जीव बार–बार आने वाले रूपांकन हैं, जिन्हें अक्सर मानव आकृतियों के साथ युद्ध करते हुए दिखाया जाता है। ये जीव मंदिर के प्रतीकात्मक संरक्षक हैं, जो बुराई को दूर भगाते हैं।

मिथुन मूर्तिया: एक विद्वतापूर्ण व्याख्या: प्रसिद्ध कामुक मूर्तियों (मिथुन) का विश्लेषण सनसनीखेज से परे एक विद्वतापूर्ण संदर्भ में किया जाएगा। यद्यपि वे कुल मूर्तियों का केवल 10% हैं , उनकी स्पष्ट प्रकृति व्याख्या की मांग करती है। प्रमुख सिद्धांतों में शामिल हैं:

तांत्रिक प्रभाव: उस समय प्रचलित तांत्रिक प्रथाओं और दर्शन को दर्शाना।

दिव्य मिलन का प्रतीक: युगलों का भौतिक मिलन व्यक्तिगत आत्मा (आत्मन) के सार्वभौमिक चेतना (ब्रह्म) के साथ आध्यात्मिक मिलन का प्रतीक है, जो अद्वैत और आनंद की स्थिति है।

पुरुषार्थों का प्रतिनिधित्व: 'काम' (इच्छा/आनंद) का चित्रण, जो 'धर्म', 'अर्थ' और 'मोक्ष' के साथ मानव जीवन के चार वैध लक्ष्यों (पुरुषार्थों) में से एक है। इन मूर्तियों को बाहरी दीवारों पर रखना यह दर्शाता है कि गर्भगृह के पवित्र, शुद्ध स्थान में प्रवेश करने से पहले सांसारिक सुखों को पार करना होगा।

धर्मनिरपेक्ष जीवन के दृश्य : आधार की पट्टियों और अन्य पैनलों पर 11वीं शताब्दी के जीवन का एक जीवंत चित्रमाला दर्शाया गया है: शाही जुलूस, सैनिक और सेनाएँ, शिकारी, संगीतकार, नर्तक और छात्रों के साथ शिक्षक। ये मूर्तियाँ चंदेल काल की संस्कृति और समाज के एक अमूल्य ऐतिहासिक रिकॉर्ड के रूप में काम करती हैं।

कंदरिया महादेव का मूर्तिकला कार्यक्रम केवल सजावट नहीं है; यह हिंदू विश्वदृष्टि पर एक व्यापक दृश्य ग्रंथ है। मूर्तियों की व्यवस्थित व्यवस्था, नीचे धर्मनिरपेक्ष जीवन से लेकर शीर्ष पर दिव्य प्राणियों तक, भक्त को अस्तित्व के विभिन्न क्षेत्रों के माध्यम से आध्यात्मिक मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने वाले एक उपदेशात्मक मानचित्र के रूप में कार्य करती है। 'काम' सहित सभी चार पुरुषार्थों को शामिल करना, एक समग्र और एकीकृत दर्शन प्रस्तुत करता है जो मानव अनुभव के सभी पहलुओं को दिव्य पथ के हिस्से के रूप में अपनाता है। यह संरचना "कामुक मूर्तियाँ क्यों हैं?" के बारहमासी प्रश्न का एक गहन उत्तर प्रदान करती है – वे एक संपूर्ण प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, जो एक ऐसे जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसे उसके सभी चरणों और अनुभवों के माध्यम से पूरी तरह से जिया जाता है।

निष्कर्ष

यह विश्लेषण पुष्टि करता है कि कंदरिया महादेव मंदिर नागर वास्तुकला शैली का सर्वोच्च शिखर है। यह स्मारकीय पैमाने और जटिल विवरण, संरचनात्मक तर्क और प्रतीकात्मक अर्थ के बीच एक आदर्श संतुलन प्रदर्शित करता है। इसकी सप्तरथ योजना, 84 उरुशृंगों के साथ इसका गगनचुंबी शिखर, और इसका व्यापक मूर्तिकला कार्यक्रम का संश्लेषण इसकी परिभाषित उपलब्धियों के रूप में सामने आता है। यह मंदिर चंदेल कलाकारों और वास्तुकारों की रचनात्मक प्रतिभा का एक स्थायी प्रमाण है।

भारतीय वास्तुकला के व्यापक इतिहास में, कंदरिया महादेव एक उच्च बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है जिसे उत्तर भारतीय परंपरा में शायद ही कभी पार किया गया हो। इसने मध्य भारत में बाद की मंदिर परंपराओं को प्रभावित करते हुए कलात्मक और वास्तुशिल्प मानकों के लिए एक मानदंड स्थापित किया। यद्यपि चंदेल राजवंश का पतन हो गया, लेकिन उनके द्वारा स्थापित कलात्मक विरासत भारतीय संस्कृति के इतिहास में अमिट बनी हुई है।

आज, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में, कंदरिया महादेव का महत्व केवल एक ऐतिहासिक या धार्मिक स्मारक के रूप में नहीं है। यह मध्ययुगीन भारत की कला, धर्म और समाज में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करने वाला एक अमूल्य सांस्कृतिक कलाकृति है। यह मानव रचनात्मकता की ऊंचाइयों और आध्यात्मिक आकांक्षाओं की गहराई का एक शक्तिशाली अनुस्मारक है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसका निरंतर संरक्षण आवश्यक है, ताकि यह प्रेरणा और ज्ञान का स्रोत बना रहे।

सन्दर्भ सूची–

1. देसाई, देवांगना खजुराहो: मॉन्यूमेंटल लिगेसी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000.
2. फ्रेडेरिक, लुई और रघु राय (फोटोग्राफर). खजुराहो. लॉरेंस किंग, 1992.
3. पुंजा, शोभिता. डिवाइन एक्स्टसी – द स्टोरी ऑफ खजुराहो. पेंगुइन बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 1992.
4. बोस, नेमाई साधन. हिस्ट्री ऑफ द चंदेलाज ऑफ जेजाकभुक्ति. के.एल. मुखोपाध्याय, 1956.
5. गंगोली, ओर्धेंद्र कुमार. द आर्ट ऑफ द चंदेलाज. रूपा, 1957.
6. मिशेल, जॉर्ज. द हिंदू टेम्पल: एन इंट्रोडक्शन टू इट्स मीनिंग एंड फॉर्म्स. यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1988.
7. हार्डी, एडम. इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर: फॉर्म एंड ट्रांसफॉर्मेशन. अभिनव पब्लिकेशन्स, 1995.
8. सुल्लेरे, एस.के. सम आस्पेक्ट्स ऑफ चंदेला हिस्ट्री, कल्चर, आर्ट एंड आर्किटेक्चर. बी.आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, 2024.
9. मिश्र, केशवचंद्र. चन्देल और उनका राजत्वकाल.
10. चंद्र, रमेश और दिनेश मिश्र. खजुराहो की प्रतिध्वनियाँ. वाणी प्रकाशन, 2000.
11. रितु. द आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ खजुराहो टेम्पल्स: लक्ष्मण एंड कंदरिया महादेव. पीएचडी थीसिस, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय.
12. पंचासरा, कंदिसा यतिनकुमार. एन एसे ऑन कंदरिया महादेव. सीईपीटी विश्वविद्यालय, 2023.
13. द्रिके, निखिल वी., et al. "क्रिटिकल इवैल्यूएशन ऑफ आर्किटेक्चरल रूडिमेंट्स फ्रॉम द पर्सपेक्टिव ऑफ रिलिजन." रिसर्चगेट, मार्च 2023.
14. दत्ता, तनिशा और विनायक अदाने. "फ्रैक्टल एनालिसिस ऑफ लक्ष्मण एंड कंदरिया महादेव टेम्पल्स इन खजुराहो." रिसर्चगेट, 2018.
15. ढाकी, एम.ए., माइकल डब्ल्यू. मिस्टर, और कृष्ण देव. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर. अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज, 1983.